अध्याय : 5

मूल्यांकन

अध्याय : 5

मू ल्यां क न

श्री विष्णु प्रभाकर युग चेतना के सफल नाटककार हैं। आधुनिक हिन्दी नाटककारों में वे एक विशिष्ट प्रतिभा सम्पन्न रचनाकार के रूप में प्रतिष्ठित हुए हैं। हिन्दी साहित्य जगत् में वे एक ऐसे ख्यातनाम साहित्यकार हैं जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन साहित्य को ही समर्पित किया है। मानव-जीवन की गहनतम अनुभूतियों का मनोवैज्ञानिक चित्रण जितनी सफलता से उन्होंने किया है उतना कदाचित हिन्दी के किसी अन्य नाटककार ने नहीं किया। उनकी रचनाओं में भारतीय मध्यवर्गीय परिवारों के वातावरण और सामाजिक कुण्ठाओं की अभिव्यक्ति जिस सहजता से रूपायित हुई हैं उससे उनके कलाकार की संवेदनशीलता का व्यापक परिचय मिलता है। नाटक-लेखन के क्षेत्र में तो उनकी प्रतिभा विशेष रूप से उजागर हुई है। सीधी और सरल भाषा में गहन समस्या का समाधान प्रस्तुत कर देना उनके कृतित्व की सफलता का उज्वल कीर्तिमान है।

नाटककार विष्णु प्रभाकरजी को बचपन से पढ़ने का बहुत चाव था। पढ़ने की इस रूचि के कारण उनकी साहित्य सृजन की रूचि बढ़ती गई। साहित्य के क्षेत्र में आने का और एक महत्वपूर्ण कारण उनका परिवेश रहा है। साहित्य की सभी प्रमुख विधाओं में वे सफलता के साथ लिखते रहे। लेकिन उनके सभी साहित्य विधाओं में नाटककार का व्यक्तित्व भारी पड़ता है। विष्णु प्रभाकरजी का नाटक की ओर अत्यधिक झुकने का कारण वे एक लम्बे समय तक रंगमंच से भी जुड़े हुए हैं। उनके नाटकों में जीवन की तरह स्थिर गति से चलने वाली एक दुनिया है। परिवेश से प्रभावित होकर भी उनके साहित्य का मूल स्वर मनुष्य की पहचान और हर प्रकार के शोषण से मुक्ति दिलाना है। इसी कारण नाटककार के लेखन की जीवन दृष्टि एक प्रगतिशील मानवतावादी लेखक की दृष्टि रही। विष्णु प्रभाकरजी को साहित्य

में गांधीवाद का प्रवक्ता कहा जाता है। उनके साहित्य विकास में गांधीवाद का बहुत बड़ा हाथ रहा है। प्रेमचंद और शरत्चंद्रजी के साहित्य ने भी विष्णु प्रभाकरजी को प्रभावित किया ओर शरत्चंद्रजी के लेखन की विलक्षण भावुकता प्रभाकरजी के लेखन में आ गयी। शरतचन्द्रजी ने नारी की मर्मकथा कहने और नारी को सामन्ती परिवेश और अंधविश्वास के कारागार से निकालने का साहस किया था। उन्होंने नारी की पीड़ा और यातना को अपनी कसक बनाकर चित्रित किया और नारी के द्वारा तत्कालीन सामाजिक जीवन के अभिशापों को उद्घाटित किया। ऐसे श्रेष्ठ साहित्यकार की जीवनी लिखते समय विष्णु प्रभाकरजी का ध्यान इस तथ्य की ओर विशेष रूप से आकृष्ट हो गया और नारी जीवन और जगत् के अभावों तथा कष्टों के प्रति उनकी दृष्टि बराबर सजग रही है।

नाटककार विष्णु प्रभाकरजी के नाटकों का प्रारम्भिक स्वर देशभक्ति और साम्प्रदायिक एकता का ही था। लेकिन उनके नाटकों को किसी एक पक्ष में बाँधना सम्भव नहीं है। उन्होंने एक ओर ऐतिहासिक और पौराणिक पृष्ठभूमि को लेकर नाटकों की रचना की, तो दूसरी ओर सामाजिक समस्याओं को उकेरने और उनसे जुझते चरित्रों को अंकित करने वाले नाटकों की दुनिया भी तैयार की है। उनके नाटकों में वर्तमान युग की आत्मा, उसका वातावरण तथा घात-प्रतिघात, भारतीय जीवन की उथल-पुथल सबका चित्रण हुआ है। आपने अपने नाटकों में हमारे जीवन से सम्बन्धित अनेक समस्याओं को उभारा है। स्त्री चरित्रों की ओर उनका ध्यान अधिक रहा है। नारी के मनोभावों को आपने अपने नाटको में एक मूल्य की तरह प्रतिष्ठित किया है। आपके नाटक साहित्य का मूल स्वर नारी की मुक्ति तथा धार्मिक शोषण का विरोध रहा है। उनके नाटकों मे नारी विभिन्न रूपों में विद्यमान है। नाटककार ने नारी पात्रों को अपने आसपास के जगत् से चुना है, इसी कारण आपने नारी चरित्रों को अधिक सक्षमता के साथ हमारे सामने रखा है।

साहित्यकार कहीं न कहीं अपने अनुभव का ही अपने चारों ओर दायरा खींचकर उसीमें अपने पात्रों का सृजन करता है। विष्णु प्रभाकरजी के पास जीवन का अनुभव काफी विस्तृत और गहरा है। इसी कारण आपके नाटक नारी जीवन के अहम सवालों से सीधे टकराते हैं। नाटककार को नारी चरित्रों की पहचान करने में बहुत सफलता मिली है। आपने समाज में नारी की स्थिति को लेकर नाटकों

का सृजन किया है। पुरूष प्रधान समाज में नारी को गौण माना गया है। वास्तविक रूप से मनुष्य जीवन के लिए स्त्री-पुरूष दोनों में समानता अति आवश्यक है। पारिवारिक जीवन में पुरूष और नारी दोनों का योगदान महत्वपूर्ण है। इसी योगदान के कारण ही समाज में स्थिरता आ जाती है लेकिन भारतीय समाज में नारी को निर्बल बना दिया है। नारी को निर्बल बनाने में पुरूष का पूरा-पूरा हाथ है। नारी की निर्बलता का प्रमुख कारण है प्रकृति द्वारासौंपा गया मातृत्व का उत्तरदायित्व। लेकिन इसी उत्तरदायित्व के कारण भारतीय समाज में नारी गौरव प्राप्त कर चुकी है। आम तौर पर यह देखा जाय तो हमारे देश की संस्कृति के लिए पुरूष ने किया हुआ यह एक दिखावा है। नारी की शारीरिक दुर्बलता के कारण सदियों से पुरूष नारी का शोषण कर रहा है। नारी को केवल अपने उपभोग की वस्तु मानकर पुरूष उसे चार दिवारी में कैद करके रखना चाहता है। पुरूष के इस दुर्व्यवहार ने नारी के जीवन विकास को ही रोक दिया है। भारतीय समाज में परम्परागत रूढ़ियाँ और खोखली मर्यादाओं का पालन केवल नारी को ही करना पड़ रहा है।

नारी समाज का एक आवश्यक अंग है। इस बात को ध्यान में रखकर नाटककार विष्णु प्रभाकरजी ने नारी जीवन की समस्याओं को उद्‌घाटित करते हुए नारी को समाज में प्रतिष्ठित करने का प्रयत्न किया है। वे नारी के सामाजिक और आर्थिक समानता के पक्षधर हैं। उनके नाटक साहित्य में नारी अपने लांछित, अपमानित और प्रताड़ित जीवन को हमारे सम्मुख रख देती है। समाज में व्याप्त विसंगतियों को हटाने के लिए संघर्ष करती है। लेकिन वह जीवन से हार नहीं मानती। समाज के अहंकारी पुरूष से लड़ने का साहस करती हुई समाज में अपना एक अलग स्थान बनाना चाहती है। विष्णु प्रभाकरजी मुख्य रूप से मध्यमवर्गीय संस्कारों में पली बड़ी नारी के चितेरे रहे हैं। समय का गति के साथ आगे बढ़ने और समाज का सामना करने की शक्ति भी उसे दी है। नाटककार नारी का पक्षधरहोने के कारण उनके मन में नारी के प्रति श्रद्धा है। वह नारी को बंधनमुक्त और स्वावलम्बी देखना चाहते हैं। उन्होंने अपने नाटकों में नारी की आदर्शता का एक पुराना रूप भी चित्रित किया है।

नाटककार विष्णु प्रभाकरजी ने नारी मन की कोमल भावनाओं को अपने नाटकों का मुख्य विषय बनाया है। उन्होंने मध्यमवर्गीय नारी की समस्याओं को केवल पारिवारिक सन्दर्भों में नहीं, बल्कि पूरे देश और समाज के परिप्रेक्ष्य में उठाया है। पुरूष प्रधान समाज में नारी की निम्नतर स्थिति, विधवा विवाह, प्रेम विवाह, नारी शिक्षा, परित्यक्ता नारी, अन्धविश्वास, आर्थिक विषमता आदि कई वर्तमान, सामाजिक समस्याओं पर आपने प्रकाश डाला है। "डॉक्टर" नाटक की रचना एक ऐसी नारी के जीवन पर आधारित है, जो शिक्षा के अभाव के कारण पति द्वारा परित्यक्ता कर दी गई है और तीव्र चुनौती एवं गहरी प्रतिशोध भावना के कारण अपने भाई के सहयोग से डॉक्टर बनती है। नाटककार ने इस नाटक में ऐसे पुरूष का चित्रण किया है जो आधुनिक समाज के अनुसार बाहरी वैभव और विलास की दुनिया से प्रभावित होकर नारी से उसी प्रकार की अपेक्षाएँ रखता है। यदि अपनी पत्नी को उसी के अनुरूप नहीं पाता तो उसे त्यागकर किसी पढ़ी-लिखी लड़की से विवाह कर लेता है। विष्णु प्रभाकरजी ने इसी समस्या को नाटक का प्रमुख आधार बनाया है। नाटककार ने इसी समस्या के द्वारा स्त्री-शिक्षा का महत्व बताकर नारी को शोषण से मुक्ति देना और आधुनिक परिवेश के अनुकूल बनाने के लिए शिक्षित करना है। "युगे-युगे क्रान्ति" में विवाह संस्था के परिवर्तित दृष्टिकोणों को उजागर किया गया है। विवाह की मान्यताओं में और पारिवारिक मूल्यों में परिवर्तन होते-होते आधुनिकता के कारण विवाह के मूल्यों का विघटन ही हो गया है। भारतीय परिवारों में जो विघटन हो रहा है उसका मूल कारण विवाह व्यवस्था ही है। प्रस्तुत नाटक में विवाह समस्याओं के संदर्भ में पुरानी पीढ़ी और नयी पीढ़ी का पुरानी आस्था और नयी आस्था का, पुरानी मान्यताओं और नयी मान्यताओं का संघर्ष है। वर्तमान युग में मध्यमवर्गीय समाज की विभिन्न समस्याओं विशेष कर प्रेम और विवाह की समस्या के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण करते हुए समाज की खोखली परम्परा और मर्यादाओं में पीसती हुई नारी का यथार्थवादी चित्रण किया गया है। आधुनिक नारी विवाह को स्त्री की गुलामी का पट्टा समझती है। वह दाम्पत्य जीवन को भी आवश्यक नहीं मानती। विवाह किये बिना भी स्त्री-पुरूष के सम्बन्ध को वह मानती है। समाज की सड़ी-गली परम्पराओं को तोड़कर उसने नयी जीवन पद्धति को अपनाया है।

"टूटते परिवेश" नाटक में वर्तमान समस्याओं की ओर संकेत किया है। समाज में आज आधुनिक परिवेश के प्रभाव के कारण सभी अपनी स्वतंत्र जिन्दगी जीना चाहते हैं। अपनी-अपनी दुनिया में मस्त रहना चाहते हैं। आज दो पीढ़ियों के विचारों और मूल्यों में भिन्नता दिखायी देती है। मनीषा और दीप्ति नये युग के साथ कदम मिलाते हुए आगे बढ़ती हुई दिखाई देती हैं। आगे बढ़ते वक्त अनेक समस्याओं से टकराती है। करूणा को मध्यमवर्गीय परिवार की गृहस्वामिनी के रूप में चित्रित किया गया है, जो अपने परिवार का बोझ उठाकर दुखों को झेलती रहती है। इस प्रकार प्रस्तुत नाटक में परिवार के सदस्यों की मान्यताओं और मूल्यों का संघर्ष है। "अब और नहीं" नाटक में स्त्री-पुरूष के अधिकार की समस्या को उभारा गया है। पुराने-जमाने से आजतक पुरूष द्वारा नारी का शोषण होता (गया) है। नारी पुरूष के सारे बन्धनों को लांघकर मुक्त होना चाहती है। नाटककार ने इस नाटक में नारी के स्वतंत्र अस्तित्व की पहचान करा दी है। "टगर" में एक परित्यक्ता नारी के अन्तर्मन की व्यथा को चित्रित किया है, जो पुरूष से बदला लेने के साहसिक निर्णय में अपने को बरबाद कर देती है। यह नाटक आधुनिक नारियों की जटिल मानसिकताओं की ओर संकेत करता है। "कुहासा और किरण" नाटक की कथा समस्यामूलक है। इस नाटक में सामाजिक जीवन की समस्याओं को उठाया है। प्रस्तुत नाटक में वर्तमान युग के वातावरण की समाज और देश की दयनीय एवं भ्रष्टाचारी प्रवृत्ति को स्पष्ट झलक देखने को मिलती है। प्रभा और सुनन्दा जैसी साहसी नारियाँ समाज में फैले भ्रष्टाचार के कुहासे को नष्ट करने का प्रयत्न करती हैं। भ्रष्टाचारी नेताओं के मुखौटे उतार कर उनके सच्चे स्वरूप को जनता के सामने रखने का प्रयत्न नाटककार ने किया है। इस नाटक के द्वारा आपने समाज की वास्तविक स्थिति पर आघात किया है।

"बन्दिनी" नाटक समाज में फैले अंधविश्वास पर चोट करता है। विज्ञान युग में भी मानव का मन किसी-न-किसी प्रकार के अन्धविश्वास से ग्रस्त है। प्रस्तुत नाटक में कालीनाथ एक नम्बर का अंधविश्वासी हे, जो अपनी थोथी एवं झूठी भावुकता के कारण अपनी बहु उमा को साक्षात देवी मानता है और उमा इस अंधविश्वास के कारागार में बंद हो जाती है उमा कीसम्पूर्ण चेतना को अंधविश्वास ग्रस लेता है।

और उमा इसमें पीसती जाती है। अंधविश्वास ने समाज को पत्थर बना दिया है जिससे समाज में अनेकानेक समस्याएँ निर्माण होती हैं। नाटककार ने इसकी ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया है। "श्वेत-कमल" में आर्थिक समस्या से जुझती हुई नारी का चित्रण किया है। साथ ही नारी जीवन में आर्थिक अभाव के कारण निर्मित वेश्या-समस्या को भी उभारा गया है। "गान्धार की भिक्षुणी" में आनन्दी अत्याचारों की मूर्तिमयी प्रतिमा के रूप में चित्रित की गई है। नारी मन की गहरी वेदना और देशप्रेम की प्रबल भावना को भी दिखाया गया है। "केरल का क्रान्तिकारी" नाटक में अम्मुकुट्टी को एक आदर्श प्रेमिका के रूप में दिखाया गया है। उस पर अपने प्रेमी के देशभक्ति का गहरा प्रभाव है। जिसके कारण वह शादी न करके जीवन भर राज्य की सेवा करने का दृढ विश्वास करती है यह भावना उसके प्रेमी वेलुतम्पी की चेतना बन जाती है। "नवप्रभात" नाटक में संघमित्रा और कलिंग युवराज के प्रेम-सम्बन्धों का वर्णन किया है। राजकुमारी भिक्षुणी एक देशप्रेमी नारी है ज्यों सम्राट अशोक से अपने देशवासियों का बदला लेना चाहती है। अपने देश के लिए वह मर मिटने को तैय्यार है। प्रस्तुत नाटक युध्द की समस्या पर गहरी चोट करता है। इसप्रकार विष्णु प्रभाकरजी ने अपने नाटकों में नारी समस्याओं का समग्र चित्रण किया है।

नाटककार विष्णु प्रभाकरजी नारी स्वतंत्रता और स्वावलम्बी नारी के समर्थक रहे हैं। आपकी नाटक रचनाओं में यह भावना ओतप्रोत भरी हुई है। नाटककार के मतानुसार युग तेजी से बदल रहा है, तो समाज में नारी की स्थिति बदल क्यों न हो। नारी को भी हमेशा नये के प्रति एवं बदलते मूल्यों के प्रति आशावादी रहना चाहिए। नाटककार ने समाज में नारी की स्थिति को ध्यान में रखते अपने नाटकों की रचना की है। विष्णु प्रभाकरजी आर्य समाज के सदस्य होने के साथ-साथ गांधीजी के भक्त रहे हैं। गांधीजी की जीवन सम्बन्धी महान नीतियों में उनका विश्वास रहा है। विश्व में प्रेम का संसार हो, व्यक्ति-व्यक्ति में कोई भेद न हो, युध्द न हो, घृणा का नाश हो आदि गांधीजी की बातों को विष्णु प्रभाकरजी बहुत चाहते हैं। गांधीजी की तरह नाटककार नारी को आदर्शवादी मानकर उसके चरित्र को ऊँचा उठाना चाहते हैं। आपके अपने नाटकों में हिंसा पर अहिंसा की विजय दिखायी है जो गांधीवादी विचारधारा का ही प्रभाव है। नारी मनोवृत्ति के बड़े

सटीक चित्र इनके नाटकों में मिलते हैं। नारी-मनोविज्ञान का चित्रण करते हुए वे नारी के अन्दर की कुछ ऐसी भावनाओं को ढूँढ निकालते हैं, जिससे यह आभास होता है कि हां यहीं वह बात है जिसकी नारी को जरूरत है। उन्होंने प्राचीन मान्यतओं तथा विचारों पर नवीन मान्यताओं एवं विचारों की विजय दिखाई है। इसके साथ ही आधुनिकता के नाम पर जो विडम्बनात्मक परिस्थितियाँ सामने आ रही हैं उसका चित्रण भी अपने नाटकों मे किया है। आज की पीढ़ी पहले की अपेक्षा अधिक स्वच्छन्द है, स्वतंत्र है, फैशनपरस्त है, विद्रोही है, कुंठित है, लापरवाह है, बेरोजगार है। नाटककार ने नारी समस्या का चित्रण करते हुए समाज की व्यवस्था पर तीखा व्यंग्य किया है। आपने नारी जीवन में व्याप्त विषमताओं को उद्‌घाटित करते हुए हमारे सम्मुख रखा है। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि विष्णु प्रभाकरजी ने अपने नाटकों में नारी जीवन में आने वाली लगभग सभी समस्याओं को कुछ को गौण रूप से एवं कुछ को मुख्य रूप से स्थान दिया है और प्रगतिशील विचारों से कुछ मात्रा में उन समस्याओं को हल भी किया है।

हमारे समाज की यह विडम्बना है कि विषम परिस्थितियों में फँसने वाली नारी को सहानुभूति से अपनाने के बजाय अधिकांश मामलों में आज भी उसे ठुकरा दिया जाता है। भारतीय संविधान में स्वावलंबी नारी की कल्पना की गई है और उसे प्रत्येक क्षेत्र में पुरूष के बराबर अधिकार दिये गए हैं। लेकिन यह अधिकार सिर्फ फायलों में बन्द है। क्या सचमुच नारी आज स्वावलम्बी और स्वतंत्र है। आज भी नारी को अपने जीवन को टूटने से बचाने के लिए अपनी भावनाओं को कुचलना पडता है। अहंकारी पुरूष अभी भी स्त्री को अपने अनुसार ही चलाना चाहता है। उसे लगता है कि जीवन भर नारी अपनी दासी बनकर रहे। अपने निजी स्वार्थ के लिए उसने नारी शोषण के विभिन्न मार्ग निकाले हैं। पुरूष ने नारी को दबा दिया है। इसका प्रमुख कारण यह है कि भगवान ने ही नारी को दुर्बलता के साथ पैदा किया है। लेकिन यह कुदरत की देन है और कुदरत-कुदरत है। उसके लिए कोई इलाज नहीं। आज तक न जाने कितने समाज सुधारकों ने, कितने साहित्यकारों ने नारी व्यथा को समाज के सामने रखा। कुछ मात्रा में उसके प्रति समाज में विद्रोह भी किये गये। लेकिन समाज में नारी की स्थिति वही की वही बनी रही। समाज

में स्त्री-पुरूषों में मुक्त प्रेम और मुक्त संबंध न आजतक रहा है और न ही कल तक रह सकता है। सदियों से स्त्री का जीवन पुरूष निर्भर और पुरूष सापेक्ष रहा है। पुरूष ने नारी मन को कोमल और कमजोर समझा है। नारी भी अपने इस भीरूता के भूषण को लेकर घूमती रहती है। एक पुरूष से बचने के लिए किसी दूसरे पुरूष का आश्रय लेती है और अपने को सुरक्षित समझती है। लेकिन समाज में स्त्री को सुरक्षित होने मात्र से उसकी समस्या हल हो सकती है। क्या उसे पुरूषों की बराबरी की भूमिका प्राप्त हो सकती है। इसके लिए नारी को पुरूषों का भय त्याग देना चाहिए। तभी वह स्वरक्षित होगी और बाद में सुरक्षित। लेकिन नारी भय त्यागने के बजाय अपने को शापित समझती है। उसे लगता है कि पुरूष के बिना उसका गुजारा ही नहीं होगा। क्योंकि उसके दिल पर पुरूष के डर की मोहर लग चुकी है। पुरूष ने नारी के इसी बात का फायदा उठाया है। उसे लगता है कि मेरे बिना नारी को कोई संरक्षक नहीं है। उस बेबस को मेरे सहारे की सख्त जरूरत है। पुरूष की इसी अहंकारी भावना के कारण ही नारी पर अत्याचार का आसमान गिर पड़ा है। वास्तव में पुरूष की अपेक्षा स्त्री अधिक श्रम करती है, फिर भी उसका जीवन पुरूष के अधीन है।

आधुनिक युग की प्रगति के कारण कुछ मात्रा में नारी जीवन में भी बहार आ गयी है। समाज में आज नारी की भूमिका में क्रान्ति हो गयी है। हर क्षेत्र में वह अपने जीवन को विकसित कर रही है। आधुनिक शिक्षा के कारण राजनीति और समाज में अपना अलग स्थान बना रही है। आधुनिकता के प्रभाव के कारण कुछ नारियाँ तो इतनी बह गई हैं कि उन्हें अपने जीवन विकास का खयाल ही नहीं रहा। अपनी फैशन की दुनिया में ही मस्त रहने लगी हैं। पुरूष की स्त्री विषयक कामना से लाभ उठाकर अपने शरीर का दुरूपयोग करने लगी और पुरूष के ऐय्याशी वृत्ति को प्रोत्साहन देती गयी। क्योंकि वह आधुनिक होने के कारण मुक्त काम-भावना में विश्वास करने लगी है। दाम्पत्य जीवन और विवाह संस्था को गौण मानने लगी। आधुनिक नारी ने इस भावना के सागर में डूबकर भारतीय संस्कृति और मानवता का अपमान किया है। क्या आधुनिक नारी की यही स्वतंत्रता है ? यही उसके जीवन की प्रगति है। नारी स्वतंत्रता के गांधीजी, राजा राम मोहन राय आदि नेताओं ने यही सपने देखे थे? इससे तो अच्छा है कि वह पुरूष के

अधीन रहे।

आज यह समझा जाता है कि नारी स्वतंत्र और स्वावलम्बी है। हर पुरूष अपने दिल और दिमाग पर जोर देकर सोचे कि सचमुच नारी स्वतंत्र है ? नारी आज भी पुरूष के बन्धनों से मुक्त नहीं है। मैं मानता हूँ कि भारतीय संविधान में नारी को समानता दी गयी है। वह पढ-लिख सकती है, इधर-उधर घुम सकती है। लेकिन केवल इन बातों से नारी स्वतंत्र नहीं है। आज भी उस पर जुल्म ढाये जा रहे हैं। उस वक्त की बात ही अलग थी, जब नारी का जीवन अंधकारमय था। आज उसे अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिए। लेकिन समाज उसे आगे बढ़ने से रोकता है। बचपन में वह पिता की लाडली होती है। सयानी होते ही वह लाडली पिता को एक समस्या लगती है। यौवन काल में वह पति की दासी बनकर रहती है और बुढापे में बेटे पर बोझ बन जाती है। यही है नारी का जीवन और यही है उस जीवन का रंग-रूप। नारी को अपनी मन की भावनाओं की स्वतंत्रता चाहिए। लेकिन पुरूष उसकी भावनाओं की कदर नहीं करता। वह अपने मन की मुक्ति के लिए जिंदगी भर तरसती रहकर काँटों पर ही गुजारा कर लेती है। वह अपने इस संकटग्रस्त जीवन से दुखी है। सुखमय जीवन के लिए छटपटाती है। लेकिन इस कोशिश में उसे हर ओर से विरोध का ही सामना करना पडता है। फिर भी नारी में मुक्ति की भावना बनी रहनी चाहिए। पुरूष स्त्री को कभी भी स्वतंत्रता नहीं दिला सकता। नारी इसी अवस्था में रहे तो पुरूष का कल्याण है, तो क्या वह स्त्री का उध्दार कर सकेगा। इसके लिए नारी को स्वयं क्रान्ति करनी होगी। अपने भय को त्यागकर पुरूष के अहंकार को तोड़ना होगा। स्वयं मरने के बाद ही नारी को स्वतंत्रता का स्वर्ग दिखेगा। अपने मन को दृढ़ करके स्वतंत्र जीवन में उसे आस्था रखनी होगी। अपनी त्यागमयी भूमिका को नारी ने हमेशा के लिए छोड़ देना चाहिए। तभी वह अपनी पूर्णत्व की खोज में कामयाब हो सकती है।

अतः हम यह कह सकते हैं कि विष्णु प्रभाकरजी ने अपने नाटकों में नारी समस्या का गहरा चित्रण किया है। नारी पर अत्याचार ढाने की समाज की परम्परा पर आपने प्रहार किया है। आधुनिक जीवन के सन्दर्भ में नारी समस्याओं का चित्रण करने में नाटककार को सफलता मिली है। साथ आपने नारी को उसके अस्तित्व की पहचान करा दी है और उसे स्वतंत्रता के लिए प्रेरित किया है। इस लघु-शोध प्रबंध में विष्णु प्रभाकरजी के नाटकों में चित्रित नारी-समस्याओं को उजागर किया गया है।